

स्वामी विवेकानंद के जीवन के तीन प्रेरक प्रसंग

★ लक्ष्य पर ध्यान लगाओ

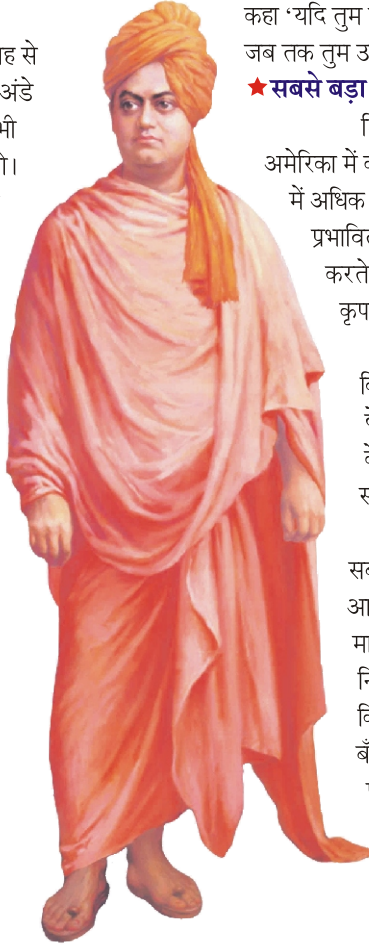
स्वामी विवेकानंद अमेरिका में भ्रमण कर रहे थे। एक जगह से गुजरते हुए उन्होंने पुल पर खड़े कुछ बच्चों को नदी में तैर रहे अंडे के छिलकों पर निशाना लगाते देखा। किसी भी लड़के का एक भी निशाना सही नहीं लग रहा था। तब वे स्वयं निशाना लगाने लगे। उनका पहला निशाना बिल्कुल सही लगा, फिर एक के बाद एक उन्होंने कुल 12 निशाने लगाये और सभी बिल्कुल सटीक लगे। ये देखकर बच्चे दंग रह गये और उनसे पूछा, 'भला आप ये कैसे कर लेते हैं ?'

स्वामी जी बोले- 'तुम लोग जो भी काम करो अपना पूरा दिमाग उसी एक काम में लगाओ। अगर तुम निशाना लगा रहे हो, तो तुम्हारा ध्यान सिर्फ अपने लक्ष्य पर होना चाहिये। तभी तुम कभी चूकोगे नहीं।' अगर तुमने जीवन में कोई लक्ष्य बनाया है, तो अपना पूरा ध्यान अपने लक्ष्य पर ही केन्द्रित करो।'

★ डर का सामना

एक बार बनारस में स्वामी विवेकानंद मंदिर से बाहर निकाल रहे थे कि तभी वहाँ मौजूद बहुत सारे बंदरों ने उन्हें घेर लिया। वे उनके नजदीक आ कर उनको डराने लगे। स्वामी जी भयभीत हो गये और स्वयं को बचाने के लिए दौड़ने लगे, पर बन्दर तो मानो उनके पीछे ही पड़ गये। पास में खड़ा हुआ एक वृद्ध संन्यासी यह सब देख रहा था, उसने स्वामी जी को रोका और कहा, रुको ! उनका सामना करो।'

स्वामी जी तुरंत पलटे और बंदरों की तरफ बढ़ने लगे, ऐसा करते ही सभी बन्दर भागने लगे। इस घटना से स्वामी जी को एक बड़ी सीख मिली और बाद में उन्होंने एक सम्बोधन में



कहा 'यदि तुम किसी चीज से डरते हो, तो उससे भागो मत, पलट कर सामना करो। जब तक तुम उस डर का सामना नहीं करते, वह तुमको भयभीत करता रहेगा।'

★ सबसे बड़ा धर्म

शिकागो सम्मेलन में व्याख्यान देने के बाद स्वामी विवेकानंद जी अमेरिका में काफी प्रसिद्ध हो गये थे। लोग उनको सुनने और उनसे धर्म के विषय में अधिक से अधिक जानने को उत्सुक हो उठे। उनके धर्म सम्बंधी विचारों से प्रभावित होकर एक दिन एक अमेरिकी प्रोफेसर उनके पास पहुँचे और प्रणाम करते हुए कहा-स्वामी जी, मुझे आप अपने हिंदू धर्म में दीक्षित करने की कृपा करें।

इस पर स्वामी जी बोले, मैं यहाँ धर्म प्रचार के लिये आया हूँ, ना कि धर्म परिवर्तन के लिए। मैं अमेरिकी धर्म प्रचारकों को यह संदेश देने आया हूँ कि वे धर्म परिवर्तन के अभियान को बंद कर प्रत्येक धर्म के लोगों को बेहतर इंसान बनाने का प्रयास करें। यही धर्म की सार्थकता और मकसद है।

हिन्दू संस्कृति विश्व बंधुत्व का संदेश देती है और मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानती है। इस पृथ्वी पर सबसे पहले मानव का आगमन हुआ था। उस समय कहीं कोई धर्म, जाति या भाषा न थी। मानव ने सुविधानुसार अपनी-अपनी भाषाओं, जातियों तथा धर्मों का निर्माण किया और अपने मुख्य उद्देश्य से भटक गया। यही कारण है कि समाज में तरह-तरह की विसंगतियाँ आ रही हैं। लोग आपस में बँट रहे हैं। इसलिए मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूँ कि अपने धर्म का पालन करो और अच्छे इंसान बनो। हर धर्म का सार मानवता के गुणों को विकसित करने में है, उन्हें अपने जीवन में अपनाओ और सबसे बड़ा धर्म निभाओ।'

✍ सुश्री आराधना रावत,

सिगनल मैनेजर I, मंडल रेल कार्यालय, मुंबई सेन्ट्रल



लोक नायक जय प्रकाश नारायण- एक बहुमुखी क्रांतिकारी व्यक्तित्व

11 अक्टूबर, 1902 को बिहार के सारण जिले में सिताब दियारा गाँव के एक सम्पन्न परिवार में लोक नायक जय प्रकाश नारायण ने जन्म लिया। इस दिन विजयादशमी थी। वे गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित थे। आपने पहली बार 1920 में गांधीजी के दर्शन किये।

1922 में मार्क्सवाद का अध्ययन करने अमेरिका के लिए रवाना हुए। उन दिनों साम्यवाद रशिया में आ चुका था, लेकिन लेनिन से मतभेद रखने वाले 'लियोन ट्राट्स्की' दक्षिण अमेरिका में बस गये थे। इसी प्रकार डॉ. लोहिया भी लगभग उसी काल में मार्क्सवाद का अध्ययन करने जर्मनी गये थे।

श्री जयप्रकाश नारायण अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को यूनिवर्सिटी और ओहायो से M.A. की डिग्री प्राप्त कर 1929 में वापस स्वदेश आये और गांधीजी के आन्दोलन में बेझिझक कूद पड़े। 1930 में इलाहाबाद कांग्रेस अधिवेशन के मजदूर विभाग का काम सम्भालकर 1934 में कांग्रेस समाजवादी पक्ष की स्थापना की और महामंत्री बनें। आजादी के पश्चात और पहले उनका क्रांतिकारी व्यक्तित्व हमेशा हावी रहा। हजारीबाग जेल की 17 फीट उँची दीवार को पार कर 1942 में भूमिगत हुए और आंदोलन का संचालन किया, जिसने ब्रिटिश सरकार को हिलाकर रख दिया।

इस बहुमुखी व्यक्तित्व का एक खास पहलू मजदूर आन्दोलन का नेतृत्व था,

जिस पर हम विशेष ध्यान देंगे। All India Railway's Federation के आप 1947 से 1951 तक अध्यक्ष रहे और साथ ही साथ रेलवे और डाकतार महासंघ के अध्यक्ष चुने गये। आपके मार्ग दर्शन में रेलवे मजदूर आन्दोलन ने सर्वश्री वी.वी.गिरि, गुरुस्वामी और पीटर अल्वारिस जैसे नेताओं ने ट्रेनिंग ली, जो बाद में रेल मजदूरों के बड़े नेता बने।

AIRF/NFIR दोनों का विलय कर 1956 में एक नये फैडरेशन का NFIR के नाम से गठन हुआ, जिसके अध्यक्ष श्री एस.आर.वसावड़ा बने। अपने निजी और पार्टी हितों को दरकिनार करके उन्होंने यह निर्णय लिया। मगर विचारों के मतभेद के चलते यह प्रयोग सफल नहीं हुआ और एक वर्ष के अन्दर ही AIRF का फिर से गठन हुआ। रेल मजदूर आंदोलन से जुड़े एक कार्यकर्ता के नाते मैं यह कह सकता हूँ कि सफल होने की हालत में यह प्रयोग रेल मजदूर आन्दोलन की प्रगति में नये आयाम स्थापित करता। राजनीति से ज्यादा उनका लोकनीति में विश्वास था। वह प्रधानमंत्री बन सकते थे, लेकिन फिर वे, वह नहीं बन पाते जो बन पाये।

'लोकनायक' की उपाधि आपको देश की जनता ने दी। 1977 में आप जनता पार्टी और सरकार के जनक बने। 8 अक्टूबर, 1979 को पटना में आपका देहावसान हुआ और 9 अक्टूबर को गंगाघाट पर दाह-संस्कार। आपकी स्मृति को कोटि-कोटि प्रणाम।

✍ श्रवण कुमार भार्गव, वरिष्ठ पत्रकार, मुंबई